अध्याय – 5

शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 प्रस्तावना

5.2 समस्या का कथन

5.3 शोध के उद्देश्य

5.4 शोध की परिकल्पना

5.5 अध्ययन के चर

5.6 शोध अभिकल्प

5.7 न्यादर्श

5.8 प्रदत्तों का विश्लेषण

5.9. मुख्य परिणाम

5.10. निष्कर्ष

5.12 शैक्षिक सुझाव

5.13 भावी शोध हेतु सुझाव

अध्याय - 5

शोध सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 प्रस्तावना

भूगोल सामाजिक विज्ञान का महत्वपूर्ण विषय है। सूर्यमंडल, वातावरण, भूगर्भ, धरातल, उच्चावच्च, मानवी क्रियाकलाप, रीति-रिवाज, परम्परा, धर्म, भाषा, राजनीति, विदेश भ्रमण इत्यादि उपयुक्त विषयों का अध्ययन भूगोल में किया जाता है। इन सभी संकल्पनाओं का ज्ञान होना आवश्यक है। यह भूगोल विषय के अध्ययन से संभव है। आज हम बालकेन्द्रीत पाठ्यक्रम की बात करते हैं परंतु अधिकतर स्कूलों में केवल पाठ्यपुस्तक को ध्यान में रखकर अध्यापन किया जाता है। भूगोल विषय में आवश्यक है कि पाठ्यक्रम का संबंध व्यावहारिक जीवन से जोड़कर छात्रों के ज्ञान में वृद्धि करना चाहिये।

भूगोल का व्यावहारिक ज्ञान होना ही सही ढंग से भूगोल का अध्ययन है परंतु आज भूगोल शिक्षण बहुत ही कमियाँ दिखाई देती है। भूगोल की पर्याप्त शैक्षिक सामग्री का न होना। भूगोल की स्वतंत्र प्रयोगशाला कक्ष नहीं होना। चार्ट, ग्लोब, नकाशा के शिवाय अध्यापन करना। बच्चों को वातावरण के सम्पर्क लाकर पढ़ाना चाहिये। इन सभी के कारण आज बच्चों को भूगोल का योग्य दिशा में ज्ञान नहीं मिल पाता। उच्च शिक्षा में लड़कियों को भूगोल की शिक्षा नहीं मिल पाती क्योंकि इस विषय में प्रोजेक्ट होते हैं। अक्सर ग्रामीण क्षेत्र में ऐसे पाया जाता हैं। इसलिये भूगोल की शिक्षा योग्य दिशा में देना आवश्यक है।

5.2 समस्या का कथन

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयों का भौगोलिक अवधारणाओं के व्यावहारिक ज्ञान का मनो-संदर्भिय चरों से संबंध का अध्ययन।

5.3 शोध के उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयों का भौगोलिक अवधारणाओं के व्यावहारिक ज्ञान का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयों को भौगोलिक अवधारणाओं के व्यावहारिक ज्ञान एवं उनकी बुद्धि के संबंध का अध्ययन।
3. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयों की शैक्षिक उपलब्धी तथा उनका भौगोलिक व्यावहारिक ज्ञान के संबंध का अध्ययन करना।
4. भौगोलिक अवधारणाओं के व्यावहारिक ज्ञान को निम्नलिखित मनो–संदर्भित चरों से संबंधित अध्ययन करना।

- स्कूलों की स्थिति के अनुसार (ग्रामीण/शहरी)।
- स्कूलों के प्रकार के आधार पर (शासकीय/निजी)।
- छात्र एवं छात्राऐं।
- सामाजिक–आर्थिक स्तर पर।

5.4 अध्ययन की परिकल्पनाऐं

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयों के भौगोलिक व्यावहारिक ज्ञान और उनकी बुद्धि में कोई सार्थक संबंध नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थीयों के भौगोलिक व्यावहारिक ज्ञान तथा उनकी भूगोल शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक संबंध नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर के उच्च व निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थीयों के भौगोलिक व्यावहारिक ज्ञान में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थीयों के भौगोलिक अवधारणाओं के व्यावहारिक ज्ञान में बीच कोई सार्थक अंतर नहीं।

5. शासकीय एवं अशासकीय स्कूलों के विद्यार्थियों के भौगोलिक व्यावहारिक ज्ञान में कोई सार्थक अंतर नहीं।

6. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के भौगोलिक अवधारणाओं के व्यावहारिक ज्ञान में कोई सार्थक अंतर नहीं।

5.5 अध्ययन के चर

1. **स्वतंत्र चर :-**

भौगोलिक अवधारणाओं का व्यावहारिक ज्ञान।

2. **आश्रित चर :-**

1. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थी
2. छात्र एवं छात्राऐं
3. सामाजिक-आर्थिक स्तर
4. बुद्धि
5. भूगोल की शैक्षिक उपलब्धि

5.6 शोध अभिकल्प

प्रस्तुत शोध अध्ययन एक सर्वेक्षणात्मक शोध अध्ययन है जो कि शोधकर्ता द्वारा चार विद्यालयों में संचालित किया गया है। जिसमें भूगोल विषय का व्यावहारिक ज्ञान देखा गया है। इसके साथ ही विद्यार्थीयों की बुद्धिमत्ता तथा उनका सामाजिक-आर्थिक स्तर भी मापा गया है। यह एक सहसंबंधात्मक अध्ययन भी है। जिसमें निरीक्षित तथ्यों के कार्य कारण संबंधों की व्याख्या करने का प्रयास किया गया है।

5.7 न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिये शोधकर्ता ने न्यादर्श का चयन साधारण यादृच्छिक न्यादर्श विधि से किया गया है। इसके अंतर्गत महाराष्ट्र राज्य के गोंदिया जिले के दो ग्रामीण तथा दो शहरी विद्यालयों का चयन

किया गया है। जिसमें एक शासकीय ग्रामीण, एक अशासकीय ग्रामीण विद्यालय तथा एक शासकीय शहरी और एक अशासकीय शहरी विद्यालय का चयन किया गया है।

5.8 प्रदत्तों का विश्लेषण

प्रदत्तों का विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रमाणित विचलन 't' मूल्य, सहसंबंध प्रतिशत का आधार लिया गया है।

5.9 मुख्य परिणाम

1. विद्यार्थीयों का भौगोलिक व्यावहारिक ज्ञान तथा उनकी बुद्धि में संबंध मध्यम सहसंबंध है।
2. विद्यार्थीयों का भौगोलिक व्यावहारिक ज्ञान तथा उनकी भूगोल शैक्षिक उपलब्धि में नगण्य सहसंबंध है।
3. माध्यमिक स्तर के उच्च और निम्न सामाजिक, आर्थिक स्तर के विद्यार्थीयों के भौगोलिक अवधारणाओं के व्यावहारिक ज्ञान में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
4. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थीयों के भौगोलिक व्यावहारिक ज्ञान में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
5. शासकीय एवं अशासकीय स्कूलों के विद्यार्थीयों के भौगोलिक अवधारणाओं के व्यावहारिक ज्ञान में सार्थक अंतर पाया गया है। शासकीय विद्यार्थियों का भौगोलिक व्यावहारिक ज्ञान अशासकीय विद्यार्थियों की अपेक्षा ज्यादा है।
6. छात्र एवं छात्राओं के भौगोलिक व्यावहारिक ज्ञान में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

5.10 निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन में परिकल्पनाओं के परीक्षण के बाद यह पता चलता है कि विद्यार्थीयों का भौगोलिक व्यावहारिक ज्ञान एवं उनकी बुद्धि के बीच मध्यम सहसंबंध है। विद्यार्थीयों का भौगोलिक व्यावहारिक ज्ञान तथा भूगोल शैक्षिक उपलब्धि के बीच नगण्य सहसंबंध है। विद्यार्थीयों का उच्च व निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर का उनके व्यावहारिक ज्ञान के बीच कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थीयों के भौगोलिक व्यावहारिक ज्ञान में कोई अंतर नहीं है। शासकीय तथा अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के भौगोलिक व्यावहारिक ज्ञान में अंतर पाया गया है। छात्र एवं छात्राओं के व्यावहारिक ज्ञान में अंतर नहीं है।

5.11 शैक्षिक सुझाव

1. भूगोल अध्यापन करते समय अध्यापक को पाठ्यक्रम का संबंध व्यावहारिक ज्ञान से जोड़ना चाहिये।
2. भूगोल अध्यापन अधिक रूचिकर बनाने के लिये अधिक से अधिक शैक्षिक सामग्री का प्रयोग करना चाहिये।
3. कक्षा अध्यापन के समय बच्चों से संवाद बनाकर बच्चों से राय लेना चाहिये।
4. बच्चों को ग्लोब, नक्शा, मानचित्र, इत्यादि शैक्षिक सामग्री विषयी विस्तृत जानकारी देनी चाहिये।
5. भूगोल के अध्यापन के लिये वातावरण के संपर्क में लाकर विद्यार्थीयों को वातावरण संबंधी जानकारी देनी चाहिये।
6. भूगोल पढ़ाने के लिये भूगोल प्रशिक्षित अध्यापक ही होना आवश्यक है।

7. भूगोल शिक्षा में लड़कियों की भागीदारी होनी चाहिये।

8. भूगोल के अध्यापन के लिये समय समय पर सेमीनार, चित्र-प्रदर्शनी आयोजित करना चाहिये।

9. भूगोल की शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिये शिक्षक विद्यार्थी संबंध मैत्रीपूर्ण होना चाहिये।

10. भूगोल के लिये स्वतंत्र 'भूगोल कक्ष' जहां भौगोलिक सामग्री उपलब्ध होनी चाहिये।

5.2 भावी शोध हेतु सुझाव

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन सिर्फ भूगोल विषय के व्यावहारिक ज्ञान से संबंधित है। यह व्यावहारिक ज्ञान अन्य विषय से संबंधित भी देखा जा सकता है।

2. व्यावहारिक ज्ञान कक्षा आठवीं, माध्यमिक स्तर पर अध्ययन किया गया हैं, ऐसे ही भौगोलिक संकल्पनाओं के व्यावहारिक ज्ञान का अध्ययन निम्नलिखित स्तर पर भी किया जा सकता है।

   अ- प्राथमिक स्तर

   ब- हायर सेकेण्डरी स्कूल

   स- महाविद्यालय स्तर

3. भौगोलिक व्यावहारिक ज्ञान अध्यापकों का भी देखा जा सकता है।

4. भौगोलिक व्यावहारिक ज्ञान और शैक्षिक सुविधाओं का भी अध्ययन किया जा सकता है।

5. भौगोलिक व्यावहारिक ज्ञान और स्व-अवधारणा, स्व-प्रभावकारिता का संबंध का अध्ययन किया जा सकता है।